

## प्रीलमिस फैक्ट्स: 29 जून, 2019

- [अहमदाबाद और कोबे के बीच समझौता](#)
- [सेक्रेड लंगूर](#)
- [महाराजा रणजीत सहि](#)
- [डरैगनफ्लाई डरोन](#)

### अहमदाबाद और कोबे के बीच समझौता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में भारत के **अहमदाबाद** तथा **जापान** के कोबे शहर के अधिकारियों ने दोनों शहरों के बीच 'जुड़वाँ शहर' (Sister Cities) की अवधारणा के तहत आशय पत्र (Letter of intent- LOI) का आदान-प्रदान किया।

- इस समझौते का मुख्य उद्देश्य दोनों शहरों के बीच व्यापार, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में अवसरों को बढ़ावा देना है।
- यह समझौता दोनों शहरों के साथ-साथ भारत-जापान के आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ाने में भी सहयोगी होगा।
- भारत और जापान के प्रधानमंत्री ने नवंबर 2016 में गुजरात और ह्योगो प्रान्त के बीच भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु समझौता किया था।
- यह समझौता शक्तिषावर्धित, व्यापार, सांस्कृतिक सहयोग, आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में गुजरात और ह्योगो के बीच आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया था।

### बहन शहरों/जुड़वाँ शहरों की अवधारणा

#### The concept of Sister Cities/Twin Towns

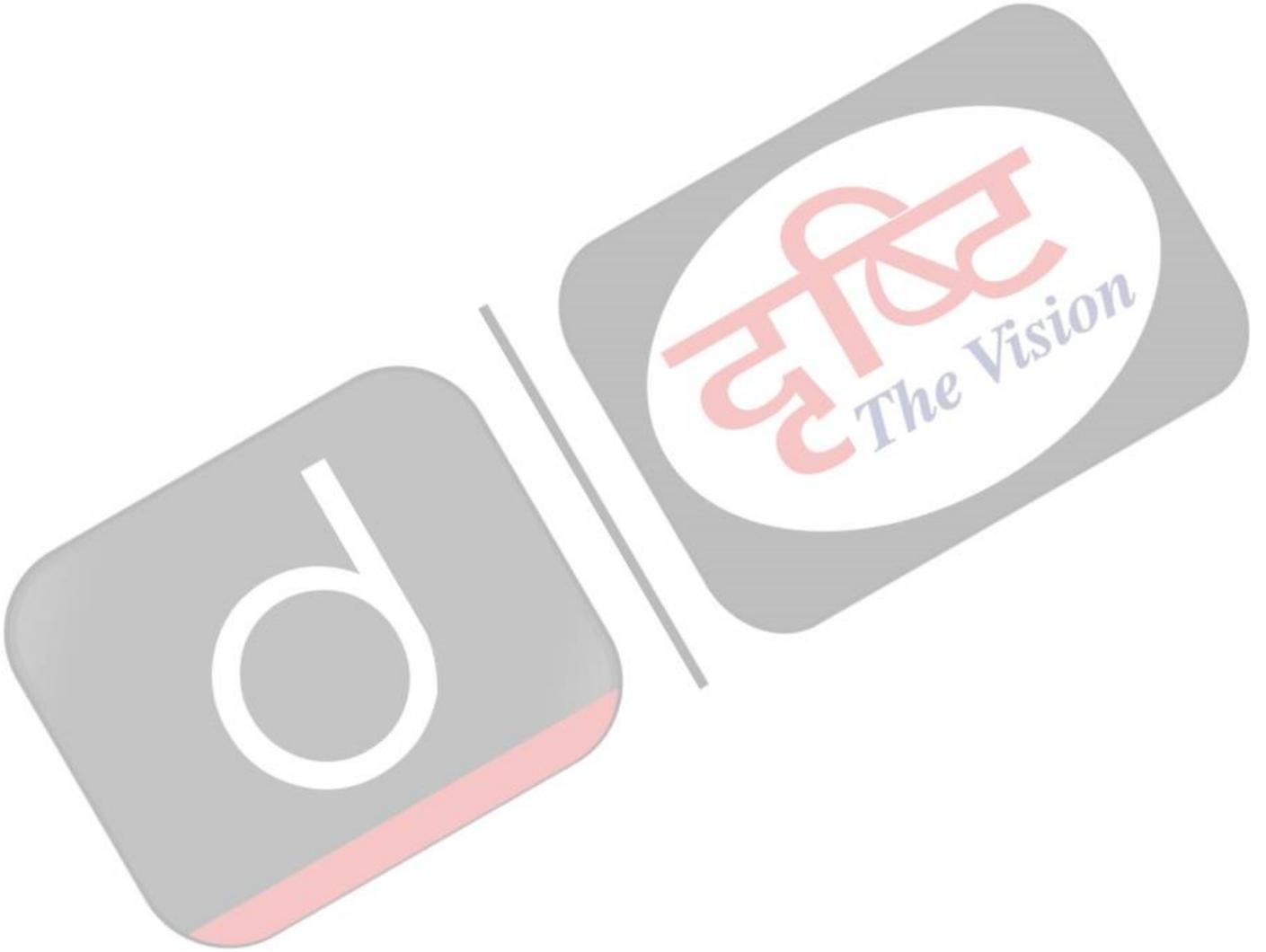
- जुड़वाँ शहरों की अवधारणा, कसबों, शहरों, काउंटियों (Counties), आयतों (Oblasts), प्रान्तों, प्रान्तीय क्षेत्रों आदि में दो अलग-अलग देशों के बीच सांस्कृतिक एवं वाणज्यिक संबंधों को बढ़ावा देने हेतु किया गया एक कानूनी और सामाजिक समझौता है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने तथा व्यापार एवं पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिये इस योजना की कल्पना की गई।
- इस अवधारणा को दोनों राष्ट्रों के बीच रणनीतिक संबंधों को बढ़ाने, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों को बढ़ावा देने के रूप में देखा जाता है।
- वर्ष 2013 में भारत ने चीन के साथ **जुड़वाँ** शहर समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे जो नमिनलखिति हैं- दल्लि-बीजिंग, बेंगलुरु-चेंगदू और कोलकाता-कुनमिंग।

### सेक्रेड लंगूर

हिमाचल प्रदेश के चंबा ज़िले में लगभग 91 साल बाद विश्व भर में विलुप्त हो चुकी लंगूर की एक प्रजाति पाई गई है।

- इससे पहले वर्ष 1928 में चंबा ज़िले में यह लंगूर देखा गया था वर्ष 1928- 2012 तक इससे संबंधित कोई जानकारी नहीं मिली थी।

॥

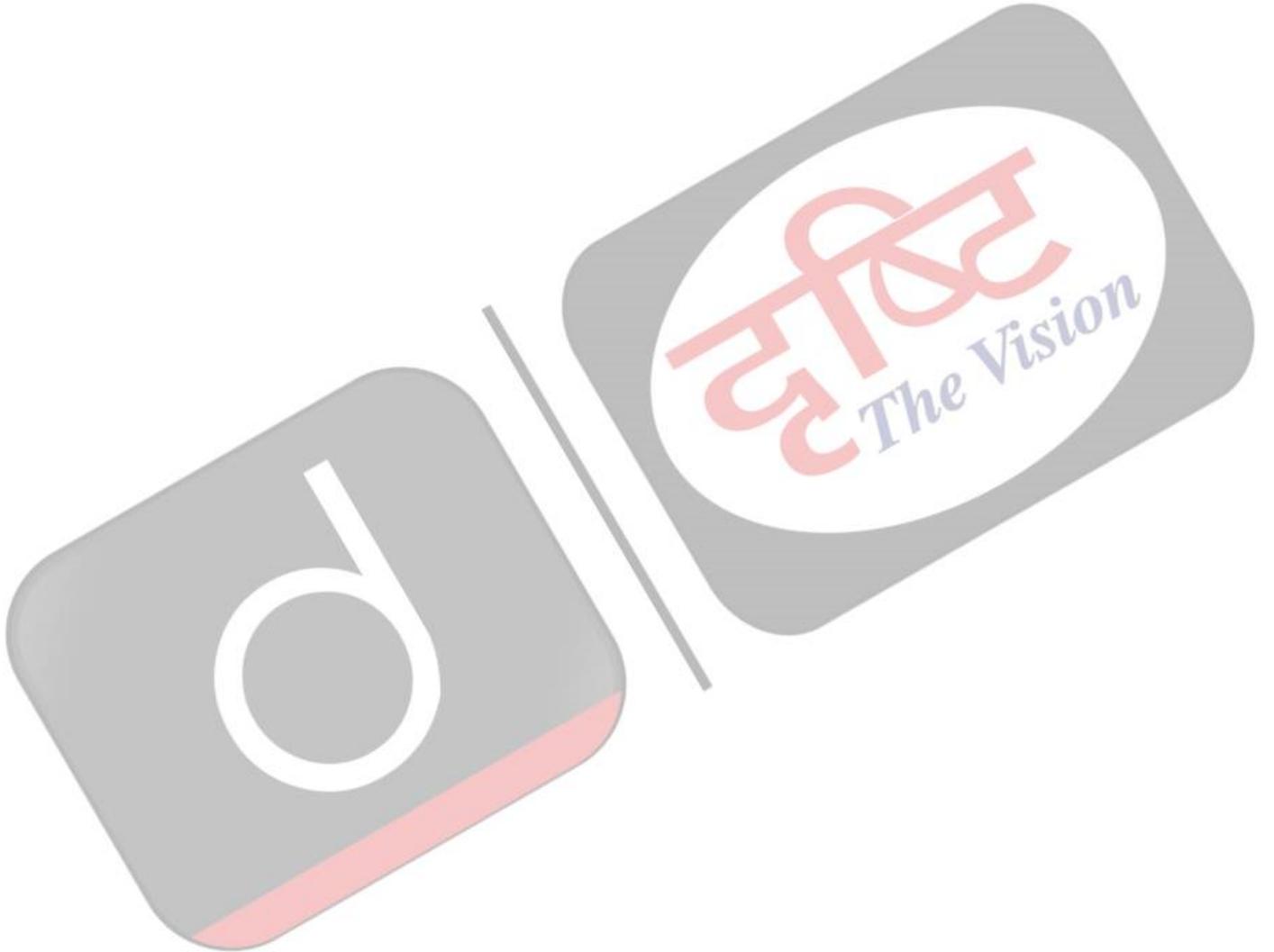


- चंबा वैली क्षेत्र में मलीं इस प्रजातल को **चंबा सेक्रेड लंगूर (चंबा पवतलर लंगूर)** कहा जाता है ।
- यह प्रजातल लंगूर की सात प्रजातलतल में सबसे भनलन है ।
- इन लंगूरों के कश्मीर और पाकस्तान की घाटी में भी पाए जाने की संभावना है ।
- ये लंगूर फल, बीज, फूल, जड़ें, छाल और कलतलतल खाते हैं ।
- यह प्रजातलतलवलश्व में मात्र चंबा में ही पाई जाती है । इसलिए इस प्रजातलतल के संरक्षण को लेकर प्रभावी कदम उठाए जाने की योजना है ।

## महाराजा रणजीत सहि

27 जून, 2019 को पंजाब में लगभग चार दशकों (1801-39) तक शासन करने वाले **महाराजा रणजीत सहि** की 180वीं पुण्यतथलतलतलनई गई ।

- इस अवसर पर लाहौर में इनकी मूरतल/प्रतमल का उदघाटन कतलया गया ।
- आठ फीट ऊंची इस प्रतमल में जसलमें रणजीत सहि को घोड़े पर चढ़ा हुआ दखलाया गया है ।
- यह मूरतल लाहौर कलल में **माई जदलतलन हवेली** के बाहर एक खुली जगह में स्थतलतल है, जसलमें **रणजीत सहि समाधल** और गुरु अरजुन देव के गुरुद्वारा **डेरा साहबल** की इमारत है ।
- रणजीत सहि की सबसे छोटी रानी के नाम पर स्थतलतल हवेली में अब सखल कलाकृततलतल की एक स्थायी प्रदर्शनी **सखल गैलरी** है ।



## ऐतहासिक पृष्ठभूमि

- मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में पंजाब क्षेत्र उभर कर आया।
- महाराजा रणजीत सिंह का जन्म 13 नवंबर, 1780 को गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में स्थिति) में हुआ था। उस समय पंजाब पर शक्तिशाली सरदारों का शासन था जिन्होंने इस क्षेत्र को मसिलस में वभाजित किया था।
- मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में पंजाब क्षेत्र उभर कर आया।
- रणजीत सिंह ने युद्धरत मसिल को उखाड़ फेंका और वर्ष 1799 में लाहौर पर वजिय प्राप्त करने के बाद एक एकीकृत सिख साम्राज्य (Unified Sikh Empire) की स्थापना की।
- रणजीत सिंह को पंजाब का शेर (शेर-ए-पंजाब) की उपाधि दी गई थी क्योंकि इन्होंने लाहौर से अफगान आक्रमणकारियों को निकाल दिया था, लाहौर इनके मृत्यु तक राजधानी बनी रही।

## 'ड्रैगनफ्लाइ' ड्रोन

जीवन के निर्माणकारी घटकों की खोज के लिये नासा (National Aeronautics and Space Administration's- NASA) ने 'ड्रैगनफ्लाइ' मशिन के तहत शनिका टाइटन पर ड्रोन भेजने की योजना है।

- इस मशिन को वर्ष 2026 में लॉन्च किया जाएगा जो वर्ष 2034 में पृथ्वी पर वापस आएगा।
- ड्रैगनफ्लाइ मशिन टाइटन (शनिका उपग्रह) पर अतीत के जीवन की संभावनाओं का भी अध्ययन करेगा।
- नासा द्वारा पहली बार किसी अन्य ग्रह पर एक बहु-रोटर वहीकल (Multi-Rotor Vehicle) उड़ाया जाएगा।
- मल्टी-रोटर वाहन में आठ रोटर होंगे जो एक बड़े ड्रोन जैसे होंगे।
- पाँच मील (8 किलोमीटर) की लंबी उड़ान के दौरान इसे भूमध्यरेखीय "शांगरी-ला" टीले पर उतारा जाएगा।
- यह टाइटन के वायुमंडलीय और सतह के गुणों की जाँच करेगा साथ ही उप-महासागर सतहों तथा जलाशयों में अतीत के रासायनिक साक्ष्यों की भी जाँच करेगा।

## टाइटन

- टाइटन शनिका सबसे बड़ा उपग्रह है तथा सौरमंडल का दूसरा सबसे बड़ा उपग्रह है।
- इसकी सतह पर नदियाँ, झीलें और समुद्र हैं (हालाँकि इनमें मीथेन और एथेन जैसे हाइड्रोकार्बन होते हैं, पानी नहीं)।
- टाइटन का वातावरण पृथ्वी की तरह नाइट्रोजन से बना है, लेकिन इसका घनत्व पृथ्वी के घनत्व से चार गुना अधिक है।
- पृथ्वी के वपिरीत यहाँ पर बादल भी उपस्थित हैं एवं मीथेन की बारिश होती है।
- यह सूर्य से लगभग 886 मिलियन मील (1.4 बिलियन किलोमीटर) दूर है।
- सूर्य से दूर होने के कारण टाइटन की सतह का तापमान -179 डिग्री सेल्सियस होता है।
- इसकी सतह का दबाव भी पृथ्वी से 50% अधिक होता है।